स्किनर का क्रिया प्रसूत सिद्धांत

डॉ. तोमेश्वरी बंछोर
असिस्टेंट प्रोफेसर
भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़

प्रस्तावना

सीखना या अधिगम एक व्यापक एवं जीवन पर्यंत चलने वाली महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म के उपरांत चिकना प्रारंभ कर देता है और जीवन भर कुछ न कुछ सीखता रहता है और इस सीखने की प्रक्रिया में कुछ चीजों का अनुकरण करके और अपने आसपास के वातावरण से वहुत हो सकता है और अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है सीखने की इस प्रक्रिया को अधिगम कहते हैं।

अधिगम की परिभाषाएं

स्किनर– "अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की प्रक्रिया है।"

वुडवर्थ– "नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं के अर्जन की प्रक्रिया अधिगम है।"

अधिगम के सिद्धांत

मनोवैज्ञानिक संप्रदाय के द्वारा अधिगम की अवधारणा का स्पष्टीकरण करना ही अधिगम का सिद्धांत कहलाता है। सीखने के सिद्धांत को दो प्रमुख वर्गों में वांटा जा सकता है:–

1. व्यवहारवादी सिद्धांत
2. संज्ञान वादी सिद्धांत

व्यवहारवादी सिद्धांत– व्यवहारवादी सिद्धांत को संबंध वादी

सिद्धांत भी कहते हैं। इस वर्ग के सिद्धांत वस्तुतः सीखने की प्रक्रिया को उद्दीपक वह अनुक्रिया के बीच संबंध बनाने के रूप में करते हैं। जैसे – घंटी बजने पर कुत्ते के मुंह से लार टपकना।

इसके अंतर्गत निम्न सिद्धांत आते हैं:–

1. थार्नडाइक का सीखने का सिद्धांत।
2. पावलाव का संबंध प्रतिक्रिया सिद्धांत।
3. हल का प्रबलन सिद्धांत।
4. स्किनर का क्रिया प्रसूत का सिद्धांत।

स्किनर का क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत

इस सिद्धांत को 1738 में बीएफ स्किनर ने प्रतिपादित किया। इसलिए इस सिद्धांत को स्क्रीन आर एस थोरी ऑफ लर्निंग के नाम से जाना जाता है।

क्रिया–प्रसूत अनुबंधन का अर्थ समझने के लिये अपने स्कूली जीवन के अतीत में झाँकियों जब आप स्कूल जाने के नाम से ही थर–थर काँपने लगते थे, रिक्शा वाले को देखकर आपको क्रोध आता था, आप उसे अपना दुश्मन समझते थे, स्कूल में बिल्कुल मन नहीं लगता था, मम्मी, पापा, भाई–बहनों को याद करके रोना आता था, अध्यापक के पुचकारने या कुछ खाना देने पर चुप हो जाते थे। फिर रोने लगते थे, चुप हो जाते थे और फिर यही क्रम तब तक चलता रहता था जब तक स्कूल की छुट्टी न हो जाये और आप अपने घर न पहुँच जायें। फिर दूसरा दिन आता, आप स्कूल जाने से फिर मना कर देते और रूठ कर बैठे जाते। मम्मी के बहुत प्यार करने पर और पैसे या टॉफी मिलने पर ही स्कूल का रुख करते। जिस दिन यह सब नहीं मिलता हड़ताल करके बैठ जाते। धीरे–धीरे आप बड़े हुए और पढ़ाई व दोस्तों में मन लगने लगा। अब आप स्कूल स्वयं ही बिना किसी लालच के जाने लगे। स्किनर के अनुसार स्कूल आप दोनों ही स्थितियों में गये लेकिन पहली स्थिति में लालच आपको स्कूल ले गया जबकि दूसरी स्थिति में पढ़ने में रुचि। पहली स्थिति शास्त्रीय अनुकूलन

तथा दूसरी क्रिया–प्रसूत अनुकूलन। इसीलिये स्किनर कहते है कि पुनर्बलन करने वाला उत्तेजक अथवा कृत्रिम उत्तेजक अनुक्रिया के साथ या तुरंत बाद नहीं देना चाहिये बल्कि अपेक्षित अनुक्रिया करने के बाद दिया जाना चाहिये। वे पुनः कहते हैं कि आप पहले प्रयोज्य को अनुक्रिया करने दें और अगर आप उसकी अनुक्रिया से सन्तुष्ट हैं तो उसका पुनर्बलन करके आगे बढ़ाइये क्योंकि पुरस्कार पुनर्बलन के रूप में अनुक्रिया को दृढ़ करता है और पुनः उसी क्रिया को करने के लिये प्रेरित करता है। अंत में सीखने वाला वांछित व्यवहार की जल्दी–जल्दी पुनरावृत्ति करके वैसा ही व्यवहार करने लगता है जैसा दूसरा उससे चाहता है। इस प्रकार अपेक्षित अनुक्रिया तथा पुनर्बलन इस सिद्धांत के दो मुख्य केन्द्र बिन्दु है और यही कारण है कि इस सिद्धांत को उद्दीपक–अनुक्रिया के स्थान पर अनुक्रिया– उद्दीपक के रूप में जाना जाता है।

स्किनर ने अपना यह परीक्षण चूहे और कबूतर दोनों पर किया। स्किनर द्वारा कबूतर पर किया गया परीक्षण अत्यधिक प्रसिद्ध है स्किनर थार्नडाइक के उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धांत एसआर चोरी की भांति उद्दीपन को अनुक्रिया हेतु आवश्यक नहीं मानते।

स्किनर उद्दीपन के स्थान पर अनुक्रिया को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं और उसे ही अधिगम के लिए आवश्यक मानते हैं। इस सिद्धांत को कार्यात्मक प्रतिबद्धता तथा साधक अनुबंध एवं नैमित्तिक वाद के नाम से भी जाना जाता है। इस सिद्धांत के अंतर्गत स्किनर ने सीखने की व्याख्या दो रूपों में की है जो इस प्रकार है:–

1. प्रतिक्रियात्मक व्यवहार
2. क्रिया प्रसूत व्यवहार

प्रतिक्रियात्मक व्यवहार वह व्यवहार है, जो किसी उद्दीपक के नियंत्रण में होता है। जबकि क्रिया प्रसूत व्यवहार प्राणी की इच्छा पर निर्भर करता है।

स्किनर का चूहे पर प्रयोग

स्किनर ने चूहा बंद करने के लिए एक पिंजड़ा बनवाया जिसके अंदर एक स्थान पर एक लीवर फिट था पिंजरे में चूहे को अंदर करने के लिए दरवाजा था लीवर को दवाने से भोजन की नली का रास्ता खुल जाता था और ऊपर रखा भोजन इस रास्ते से भोजन की प्लेट में गिर जाता था इस पिंजड़े को स्किनर वाक्स कहते हैं।

स्किनर ने इस वॉक्स में एक भूखे चूहे को अंदर कर दिया और उसने देखा कि चूहे ने अंदर जाते ही उछल कूद करना शुरू कर दिया इस उछल कूद के में एक बार उसका पंजा अचानक उस लीवर पर पड़ गया और भोजन उसकी प्लेट में आ गया उसने भोजन प्राप्त किया और अपनी भूख मिटाई। इससे उसे बड़ा संतोष मिला अब उसे जब फिर कुछ खाने की इच्छा हुई तो उसने पुनः उछल कूद करना शुरू किया इश्क उछल कूद में वह लीवर पुनः दब गया और उसने भोजन प्राप्त किया स्किनर ने देखा कि भोजन मिलने से चूहे की क्रिया को पुनर्बलन मिला उसने इस चूहे पर यह प्रयोग कई बार दोहराया और देखा कि एक स्थिति ऐसी आई भूखे चूहे ने पिंजरे में पहुंचते ही लीवर दवाकर भोजन प्राप्त कर लिया दूसरे शब्दों में उसने लीवर दवाकर भोजन प्राप्त करना सीख लिया।

स्किनर वॉक्स में कबूतर पर किया गया प्रयोग

स्पिनर ने सीखने के सिद्धांत को स्पष्ट करने के लिए अपना प्रयोग एक कबूतर पर दोहराया उन्होंने एक प्रयोग के लिए एक विशेष प्रकार का वॉक्स में एक ऐसी ऊंचाई पर जहां कबूतर की चोच जा सकती थी वहां एक प्रकाश पूर्ण चाबी लगाई गई इस चाबी के दबाने से कबूतर के खाने के लिए दाना मिल सकते थे साथ ही इसमें छह प्रकार के प्रकाश की ऐसी व्यवस्था की गई थी कि भिन्न भिन्न बटन दबाने से भिन्न भिन्न प्रकाश होता था इस वॉक्स को कबूतर वो कहते हैं।

स्पिनर ने इस वॉक्स में एक भूखे कबूतर को बंद कर दिया इसके बाद चाबी से मैं सबसे हल्के रंग का प्रकाश पहुंचाया गया उसकी चमक से कबूतर उसकी ओर खींचा और उसने उसके इधर–उधर चोंच मारी एक

बार उसकी चोंच प्रकाशित चाबी के ऊपर लग गई उस कबूतर पर यह प्रयोग 6 प्रकार की प्रकाश व्यवस्था पारीक किया गया स्किनर ने देखा की प्रकाश में परिवर्तन करने से कबूतर के अनुक्रिया में थोड़ा परिवर्तन हुआ परंतु भोजन मिलने से उसके सही जगह चोट मारने की क्रिया को पुनर्बलन मिला और एक स्थिति ऐसी आई जब भी इस कबूतर को भूखा रखने के बाद इस बॉक्स को बंद किया गया वह उस चाबी को दबाकर भोजन प्राप्त करने लगा दूसरे शब्दों में उसने चाबी दबाकर भोजन प्राप्त करना सीख लिया।

यह सिद्धांत पुनर्बलन पर विशेष बल देता है जब किसी प्राणी को इसी अनुक्रिया से सुखद परिणाम प्राप्त होता है तो वह उस अनुक्रिया को बार–बार दोहराता है इस बार बार दोहराने की प्रक्रिया को इच्छा उत्पन्न होने को पुनर्बलन कहते हैं।

पुनर्बलन दो रूपों में विभाजित है:–

1. धनात्मक पुर्नबलन और ऋणात्मक पुनर्बलन
2. प्राथमिक पुनर्बलन और गौण पुनर्बलन

धनात्मक पुर्नबलान किसी उद्दीपक की उपस्थिति में मिलता है जैसा कि भूखे कबूतर को भोजन का मिलना।

ऋणात्मक पुनर्बलन उसे कहते हैं जो किसी उद्दीपक की अनुपस्थिति से मिलता है जैसे किसी शिक्षक की अनुपस्थिति में उस शिक्षक से डरने वाले बालक की अनुक्रिया में वृद्धि होना।

किसी उद्दीपक से सीधा प्राप्त होने वाले पुनर्बलन को प्राथमिक पुनर्बलन कहते हैं जैसे भूख प्यास काम, काम आदि से प्राप्त होने वाला पुनर्बलन तथा गौण पुनर्बलन से तात्पर्य उस पुनर्बलन से होता है जो प्राथमिक पुनर्बलन प्रदान करने वाले उद्दीपक के साथ लगातार उपस्थिति होने के कारण प्राप्त होता है जैसे भोजन के साथ घंटी की ध्वनि को लगातार सुनने से कुत्ते की अनुप्रिया को पुनर्बलन मिला।

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

- [illegible]

- यह सिद्धांत सीखने में पुनर्बलन को बहुत महत्व देता है इसलिए शिक्षण कार्य में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थियों को पुनर्बलन देने में इसका उपयोग किया जाता है।
- शिक्षार्थियों की सफलता के लिए उन्हें क्रियाशील रखने हेतु इस सिद्धांत का उपयोग किया जाता है।
- सक्रिय अनुबंध का प्रयोग समस्यात्मक बालकों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है।

शैक्षिक महत्व

- इस ईंधन का प्रयोग जटिल से जटिल कार्यों को सीखने में किया जा सकता है जैसे स्क्रिनर ने कबूतर को किसी निश्चित जगह पर चोट मारना सिखाया।
- स्किनर सीखने में पुनर्बलन को बहुत अधिक महत्व देते हैं। एक प्रणाली में छात्र अपने गति एवं योग्यता के अनुसार सी खता है। छात्र तभी आगे बढ़ता है जब छात्रों को उसका सही उत्तर देने पर पुनर्बलन दे सके।
- इस सिद्धांत का उपयोग बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए किया जा सकता है।
- यह सिद्धांत करके सीखने पर अत्यधिक जोर देता है।
- यह सिद्धांत बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है।
- इस सिद्धांत के द्वारा बच्चों में समस्या समाधान विधि का विकास होता है।
- इस सिद्धांत के अनुसार अनुक्रिया करने पर कार्य की सफलता के लिए अभिप्रेरणा को एक अच्छा स्रोत माना गया है।
- सिद्धांत के अनुसार सीखने में अधिक से अधिक सफलता तभी मिल सकती है जब सीखने की सामग्री इस प्रकार आयोजित किया जाए कि सीखने वाले को अधिक से अधिक सफलता मिले और उसी समय उसे सहित रिया पर पुनर्बलन मिलना।

- व्यक्ति के सामूहिक विकास के लिए सिद्धांत का प्रयोग किया जा सकता है।
- स्किनर आर के अनुसार हम अपने आप में वही होते हैं जिसके लिए हम प्रोत्साहित किया जाता है।

निष्कर्ष

स्किनर के प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकलता है कि अनुक्रिया करना प्राणी का एक स्वाभाविक गुण है जब भी उसे कोई आवश्यकता होती है वह उसके अनुसार क्रियाएं करना प्रारंभ कर देता है।

संदर्भित ग्रंथ

- मिश्र ब्रज कुमार (2010) *मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन,* पी. एच.आई. प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
- मंगल एस. के. (2011) *शिक्षा मनोविज्ञान,* पी.एच.आई. प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
- शर्मा आर.ए. (2011) *शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व,* आर.लाल बुक डिपो, आगरा।
- https://web.hindikeawaru.com
- https://web.samerducation.com
- https://web.hindikeau.com

■■